[Dr. Ranen Sen]

position of the Government of India than taken a few days earlier. Therefore, I do not press the resolution, and I withdraw it.

Mr. Deputy-Speaker: Has the hon. Member the leave of the House to withdraw the resolution?

Hon. Members: Yes.

The resolution was, by leave, withdrawn.

16.53 hrs.

RESOLUTION *RE*: UPLIFT OF SCHEDULED CASTES

श्री बाल्मीकी (खुर्जा) :

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसारमुता स्वसा ।
सम्यञ्च: सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ।।

उपाध्यक्ष महोदय, जब हमारे देश का मस्तिष्क बाहरी और भीतरी समस्याओं से चिन्तित है, दबा हुआ है, ऐसे समय में एक चिन्ता और जो मेरे इस संकल्प के विषय में है, वह भी मैं आपके सामने रक्खूं तो कोई अच्छा नहीं लगता है । यह बात आवश्यक है कि सारे संसार में प्रेम और सद्भावना उत्पन्न हो । इस लिये इस अथर्व वेद के मंत्र में आदेश दिया गया है कि 'भाई भाई में द्वेष न हो, बहन बहन में किसी प्रकार की घृणा न हो और सब एक मत हो कर, एक व्रति होकर समान दृष्टि से मीठे वचन बोलें' । लेकिन संसार में या देश के अन्दर सत्तापूर्ण लिप्सा बढ़ती हुई दिखाई देती है, चाहे वह देशों की हो चाहे वह यहां मानवों की हो । ऐसे समय में जब कि देश के अन्दर भाषायी भेद उभरे हों, भाषायी झगड़े उभरे हों, जो कुछ भी इधर हुआ है वह आपके सामने है ।

उपाध्यक्ष महोदय : पहले आप अपना संकल्प सदन के सामने रख दीजिये ।

श्री बाल्मीकी : मेरा जो संकल्प है वह इस प्रकार है :

> "इस सभा की यह राय है कि तीन पंच वर्षीय योजनाओं के बाद भी अनुसूचित जातियों के सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षिक विकास के कार्य में कोई उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई है और, इस लिये, यह सभा भारत सरकार से आग्रह करती है कि वह इस सम्बन्ध में अब तक हुई प्रगति का मूल्यांकन करने और अनुसूचित जातियों के कल्याण, विशेषकर सरकारी नौकरियों में उन के लिये पदोन्नतियों तथा स्थान रक्षित करने, भूमि दिये जाने, आदि सम्बन्धी उपायों का सुझाव देने के लिए एक उच्च शक्ति प्राप्त आयोग नियुक्त करे ।"

मैं अपने इस संकल्प को पेश करने के लिये खड़ा हुआ हूं । यह बात अवश्य है कि जब हम अपनी दशा का जिक्र इस सदन में करते हैं तो आज भी हमें अस्पृश्यता की जो विभीषिका है देश के अन्दर उस ओर जाना होगा । यह बात ठीक है कि अस्पृश्यता निवारण का जो कार्य है वह एक मानवीय कार्य है, लेकिन जिस गति से वह हमारे इस देश के अन्दर चल रहा है उस से हम अभी सन्तुष्ट नहीं हैं । आज भी आप देखें कि जो चीजें और जिस प्रकार के जुल्म और सितम हमारे लोगों पर हो रहे हैं उस के पीछे एक ही कारण है अस्पृश्यता का । यह ठीक है कि इस के लिये सरकारी आधार पर और दूसरे तरीके से प्रयत्न चलते हैं, लेकिन उन प्रयत्नों में कोई जीवन या कोई उस प्रकार की प्रगति नहीं

प्रतीत होती है। केवल इस लिये कि ग्राधे मन से जो बात कही जाती है वह कोई प्रभाव नहीं रखती है। सारे देश के ग्रन्दर यह बात जग रही है कुछ विशेष लोगों के दिमाग में कि तीन पंच वर्षीय योजनाग्रों के क्रम के बाद भी हमारे हरिजन भाइयों को, इस तरह के दबे हुए लोगों को, कोई विशेष जागृति, कोई विशेष उन्नति, कोई विशेष जीवन धारा, किसी भी दृष्टि से, सामाजिक दृष्टि से, ग्रार्थिक दृष्टि से, शैक्षिक दृष्टि से ग्रौर दूसरी दृष्टियों से, प्राप्त हुई है। लेकिन मैं ऐसा नहीं मानता हूं। मैं यह कहने के लिये तैयार हूं कि यदि इस बात की विशेष दृष्टि से जांच की जाये, कोई उच्च स्तरीय ग्रायोग कायम कर के, तो यह बातें सामने ग्रा सकती हैं। इस बात से बिल्कुल इन्कार नहीं किया जा सकता है कि सारे देश के ग्रन्दर, राज्य सरकारों के ऊपर भी यह उत्तरदायित्व ग्राता है, जो उन्होंने निभाया नहीं है।

ग्रपने संविधान के ग्रन्दर हम ने ग्रस्पृश्यता को समाप्त कर दिया है, शब्द मात्र की दृष्टि से, लेकिन वह ग्रस्पृश्यता ग्राज भी लोगों के दिल दिमाग के ग्रन्दर, उन की विचार धारा के ग्रन्दर, उन की हड्डी ग्रौर मज्जा के ग्रन्दर, घुसी हुई है। इसी कारण से जो घटनायें ग्राज भी घटित हो जाती हैं उन का जिस तरह से निराकरण किया जाता है वह एक इस प्रकार का विषय है कि जिस पर हमें सन्तोष नहीं होता है। यह बात जरूर है कि जब हम देश की एकता के बारे में, राष्ट्रीय एकता के बारे में, भावात्मक एकता के बारे में सोचते हैं तो हमारे ध्यान में ग्राता है कि हिन्दुस्तान का यह ग्रंग, जो कि एक ग्रावश्यक ग्रंग है, जिस के उद्धार के लिये बापू जी ने प्रयत्न किया, महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रयत्न किया ग्रौर साधू सन्तो ने प्रयत्न किया ग्रौर एक मानवीय दृष्टिकोण देश में पैदा किया, वह ग्राज भी एक ऐसा जीवन व्यतीत करता है, जो जीवन मानवीय दृष्टि से एक गर्हित जीवन है, गिरावट का जीवन है। उस में कोई उन्नति नज़र नहीं ग्राती है। यह बात इस लिये नहीं है कि इस में दोष उन जातियों का है या उन लोगों का है जो ग्रस्पृश्य कहलाते हैं ग्रौर ग्राज भी ग्रस्पृश्यता की विभीषिका से ग्रस्त हैं। इस समस्या का ग्रगर इस सदन में जिक्र किया जाता है तो ग्राप यह समझ लीजिये कि जो जातिवाद है उस से हम लोग चिपटे नहीं रहना चाहते। ग्रभी "सर्चलाइट" पेपर बिहार का है उस के 24 फर्वरी के ग्रंक में ग्रग्र लेख लिया गया है: "क्लिंगिंग टू कास्ट"। उस में लिखा गया है कि जो हरिजन लोग हैं, जो ग्रस्पृश्य लोग हैं वह जाति वाद से चिपटे रहना चाहते हैं। मैं यह दोषारोपण करना चाहता हूं ग्रौर पूछना चाहता हूं कि ग्राज सारे हिन्दुस्तान के ग्रन्दर कौन सी ऐसी जातियां हैं जो जातिवाद से नहीं चिपटी हुई हैं या जिन पर जातिवाद का प्रभाव नहीं है, चाहे ग्रार्थिक लाभ की दृष्टि से देखा जाये ग्रथवा दूसरे मामलों में देखा जाये। यदि लाभ की दृष्टि से देखा जाये, ग्रार्थिक लाभ ग्रगर किसी भी दृष्टि का नाम है, तो उस में भी दूसरे लोग ग्रपना फायदा उठाते हैं। मैं यह कहने के लिये तैयार हूं कि हम लोग जिस दृष्टि से भी सोचते हैं वह जाति के ग्राधार पर नहीं है। यह हो सकता है कि कुछ जातियां विशेषकर उन्नति कर गई हों, लेकिन वह उन्नति एक ऐसी उन्नति नहीं है जो व्यापक हो, वह कुछ मुट्ठी भर लोगों की उन्नति है। मैं यह कहने के लिये तैयार हूं कि ग्राज भी देश की हरिजन जातियों की विशेषकर जो भंगी, पासी या डोम ग्रादि इस तरह की जातियां हैं उन की ग्रवस्था ग्रत्यन्त शोचनीय है। इस दृष्टि से ग्राज मैं इस ग्रवसर पर यह संकल्प पेश करने के लिये खड़ा हुग्रा हूं ग्रौर देश का ध्यान, राष्ट्र का ध्यान इस ग्रोर ग्राकर्षित करना चाहता हूं।

Mr. Deputy-Speaker: The hon. Member may continue next time.

17 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Seventeen of the Clock on Saturday, February 27, 1965/Phalguna 8, 1886 (Saka).

GMGIPND—LS II—2249 (Ai) LSD—25-3-65—970.